अध्याय 11

धर्मग्रंथ और उन की कीमत

गुरु एक आध्यात्मिक महापुरुष होता है जिसका साम्राज्य सचखंड तक फैला होता है। उसे जड़ से चेतन तक के तीनों विशाल खंडों—अंड, ब्रह्मांड और सचखंड का निजी अनुभव होता है।

वह मन-इंद्रियों के बंधन से मुक्त होता है और विशुद्ध रूहानियत से सराबोर होता है। जीव जब तक किसी ऐसी हस्ती के संपर्क में नहीं आता, उसकी सोई हुई रूहानी तड़प जागृत नहीं होती। गुरु वास्तव में एक जलती मशाल के समान होता है जो अनेकों बुझे हुए दीपों को जला देती है। वह अपनी तवज्जो से दूसरों को जीवनदान दे सकता है। कुछ लोग समझते हैं कि धर्मग्रंथों के अध्ययन मात्र से ही वे आत्म-ज्योति को पा लेंगे और इसके लिये गुरु की आवश्यकता नहीं। हम इस पड़ाव पर ठहर कर पवित्र धर्मग्रंथों व शास्त्रों का मूल्यांकन करना चाहेंगे।

आखिर ये धर्मग्रंथ पुरातन संतों, महात्माओं, फकीरों और पवित्र पुरुषों के आध्यात्मिक प्रयोगों और निजी अनुभवों का संग्रह ही हैं। प्रेमाभक्ति के साथ उन्हें पढ़ना अच्छा है। हमारे दिल में उनके प्रति श्रद्धा होनी चाहिये क्योंकि वे अध्यात्म-विद्या के महान खजाने हैं जिन्हें हमारे पूर्वजों ने हमारे लाभ के लिये सँभाल कर रखा हुआ है।

आध्यात्मिक महापुरुषों की जीवनगाथाएँ और पवित्र पुस्तकें हमारे अंदर आध्यात्मिक तलाश की जागृति और ललक पैदा करती हैं और आशा व उत्साह के साथ हमें इस पथ पर आगे बढ़ने के लिये उत्साहित करती हैं। धर्मग्रंथों से हम एक सीमा तक परमार्थ के सिद्धांतों से परिचित हो सकते हैं लेकिन उनका सही महत्त्व नहीं समझ सकते और

न ही ज़िंदगी का उभार पा सकते हैं। ये दोनों चीजें केवल किसी ज़िंदा महापुरुष से ही मिल सकती हैं।

आखिरकार पुस्तकें जड़ हैं और जड़ पदार्थ से जिंदगी नहीं मिल सकती ।

जैसे ज्योति से ज्योति जलती है, ऐसे ही जीवन से जीवन प्राप्त होता है। कोई जागृत-आत्मा ही हमें गहरी नींद से जगा सकती है। हम चाहे युगों-युगों तक धर्मग्रंथ पढ़ते रहें और अनगिनत बलिदान व पवित्र कर्म करते रहें लेकिन आत्मिक जागृति और आत्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त नहीं कर सकते।

आध्यात्मिकता न तो खरीदी ही जा सकती है और न ही किसी को सिखाई जा सकती है परंतु इसे किसी आध्यात्मिक हस्ती से, जिससे आध्यात्मिकता की किरणें बह रही हों, इस तरह से पकड़ा जा सकता है जैसे कोई छूत का रोग पकड़ लेता है।

संतों की शिक्षाओं को केवल बुद्धि द्वारा जानना ही नहीं होता बल्कि उनको अनुभव में लाना होता है। अध्यात्म-पथ के सैद्धांतिक ज्ञान के अतिरिक्त हमें इसका व्यक्तिगत अनुभव करके खुद देखना होता है। यह एक विज्ञान भी है तथा कला भी, जिसकी रहस्यमयी गहराइयों में कोई निपुण आत्मविज्ञानी महापुरुष ही मार्गदर्शन करके हमें सुरक्षित निकाल कर आगे ले जाता है।

हरि की सेवा सतिगुरु पूजहु करि किरपा आपि तरावै।। (1264)

(सत्गुरु की भक्ति करके ही हम परमात्मा की सेवा कर सकते हैं क्योंकि केवल उसकी कृपा से ही हम परमात्मा तक पहुँच सकते हैं।)

धर्मग्रंथ और पुरातन महापुरुष भी ज़ोर देकर हमें जीवित सत्गुरु की तलाश करने का उपदेश देते हैं।

चरन साध के धोइ धोइ पीउ।। अरपि साध कउ अपना जीउ।।

साध की धूरि करहु इसनानु।। साध ऊपरि जाइए कुरबान।।(283)

(साधु के चरणों की धोवन का पान करो। उसके लिये अपने आप को बलिदान कर दो। उसके चरण-कमलों की धूलि में स्नान करो और उस के लिये निज को न्योछावर कर डालो।)

संता की होइ दासरी एहु आचारा सिखु री।। (400)

(संतों के दास बन कर रहो और तुम्हें यही सीखने की ज़रूरत है।)

भाई गुरदास भी बतलाते हैं :

वेद ग्रंथ गुर हटि हहि जित लगि भौजल पार उतारा।।

सतिगुर बाझ न बुझीऐ जिच्चर धरे न गुरु अवतारा।।

(गुरु के अंदर सभी वेद आदि धर्म-ग्रंथ छिपे पड़े हैं। उसके साथ लगने से इंसान संसार-सागर से सुरक्षित पार हो जाता है। सत्गुरु के बिना हम सत् का अनुभव नहीं कर सकते । परमात्मा को इस काम के लिये संसार में आना पड़ता है।)

ऐसे लोग भी हैं जो कड़ी मेहनत और एकाग्रता से जीवन भर धर्मग्रंथों का अध्ययन करते हैं। वे बहुत किताबी ज्ञान रखते हैं, बड़े-बड़े भाषण कर सकते हैं और आध्यात्मिक मामलों पर लंबे चौड़े पांडित्यपूर्ण व्याख्यान दे सकते हैं परंतु दुर्भाग्य से वे आत्मानुभव और आध्यात्मिक ज्ञान से खाली होते हैं। उनका जीवन और आचरण उतना ही खोखला होता है जितना कि बाकी सांसारिक लोगों का। उन्होंने आत्मिक ज्ञान नहीं पाया होता, न ही किसी ज़िंदा गुरु के चरणों में बैठ कर जीवन का अमृत पीया होता है।

'आसा की वार' में हमें निम्न उल्लेख मिलता है :

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ।।
पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात।।
पड़िअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास।।
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास।।
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख।। (467)

(व्यक्ति चाहे अपने मस्तिष्क को ज्ञान के भंडार से बोझिल कर ले और नियमित रूप से ज्ञान बढ़ाता रहे, जीवन भर सालो-साल, दिन रात, क्षण-क्षण पढ़ता ही रहे, फिर भी ऐ नानक! एक बात आप निश्चय करके जान लो कि वह मनुष्य बोझ से लदे गधे के समान ही रहेगा।)

नानक कागद लख मणा पढ़ पढ़ कीजे भाउ।।
मसु तोटि न आवई लेखणि पवन चलाउ।।
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ।। (15)

(ऐ नानक! चाहे कोई व्यक्ति मनों-टनों के हिसाब से धर्मग्रंथ पढ़ता रहे और लगातार इसी काम में लगा रहे, फिर भी अंत में इस अध्ययन की क्या कीमत है क्योंकि 'नाम' सभी पवित्र ग्रंथों से बहुत दूर व परे है।)

इस सब के बावजूद धर्मग्रंथों में हमें उस प्रभु के ज्ञान का केवल मात्र वर्णन ही मिलता है लेकिन वे उसका वास्तविक अनुभव नहीं दे सकते।

गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथ कहावै सोइ।। (59)

(आप यह बात निश्यचपूर्वक जान लें कि सारे ज्ञान और बुद्धिमत्ता का सार केवल धुनि है और यह अकथनीय है।)

यह सार तत्त्व हमारे अंदर है लेकिन हम इस सार (शब्द) को तब

तक नहीं पा सकते जब तक हम एमर्सन के शब्दों के अनुसार अंतर में खटखटाना (tap inside) नहीं सीख जाते।

डा. जे. डी. राईन, प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक और शोधकर्त्ता अपनी पुस्तक 'मांइड एंड दि न्यू वर्ल्ड (मन और नया संसार)' में बतलाते हैं कि मनुष्य के अंदर कोई ऐसी चीज़ है जो सारे जड़ पदार्थों से ऊपर है। अगर आध्यात्मिक ज्ञान पुस्तकों से मिल सकता होता तो अब तक सभी पढ़े – लिखे लोग संत बन गये होते। परंतु वास्तव में हम पाते हैं कि सभी किताबों का ज्ञान होते हुए भी वे लोग उतने ही जड़ हैं जितने कि वे सभी पुस्तकालय, जिनमें ये किताबें भरी पड़ी हैं।

किताबी ज्ञान के बोझ से लदे हुए व्यक्ति की तुलना उस गधे से की जा सकती है जो चंदन की लकड़ी के भरे बोझ से लड़खड़ा रहा हो पर उस चंदन की सुगंधि से बेखबर हो।

जैसे हलवे में पड़ी कड़छी उस के स्वाद से बेखबर रहती है, वैसे ही वे ज्ञानी लोग असली ज्ञान के अनुभव से बेखबर हैं। ज्ञान के इस युग में, जब संसार में वस्तुतः पुस्तकों की बाढ़ सी आई हुई है, बदकिस्मती से परमार्थ की कोई बाढ़ नहीं आई और परमार्थी ख्याल रखने वाले लोगों पर तो छिड़काव भी नहीं हुआ।

महापुरुषों के आगमन से ही रूहानियत की रोशनी प्रकट होती है और ऐसे बहुत से लोग हैं जो उनके रूहानी रंग में रंगे जाते हैं। कोई महाचेतन महापुरुष ही चेतन आत्मा को जगा कर उसे जिंदगी बख्श सकता है। यह काम न तो पुस्तकें कर सकती हैं और न ही बौद्धिक ज्ञान। कोई व्यक्ति कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, जब तक उसके अंदर स्वयं जीवन न हो तब तक वह दूसरों के अंदर जीवन नहीं डाल सकता।

आध्यात्मिक जीवन की बातें करना बड़ा आसान है लेकिन उसे जीवन में ढालना मुश्किल है। ऐसे लोग आध्यात्मिकता का ढोंग करते हैं, उसका दिखावा करते हैं परन्तु कोई अच्छाई नहीं कर सकते।

मौलाना रूम फरमाते हैं :

अन्दर आँ दर सायाए आँ आकले।
कस नशायद वुरत राह अज़ नाकले।

(किसी संत के दायरे में आओ, तुम किसी नकलची से इस रास्ते को नहीं पा सकते।)

बाइबल में ईसा मसीह फरमाते हैं :

नकली अवतारों से सावधान रहो, जो तुम्हारे पास भेड़ के वेश में (सीधे सादे बन कर) आते हैं परंतु अंदर से वे तुम्हारे माँस के भूखे भेड़िये होते हैं। – *मत्ती 7:15*

संत की संगति से जीव के अंदर परमार्थ की चाह पैदा होनी स्वाभाविक है। किसी संत को परखने के लिए वास्तव में यही एक कसौटी है। ऐसा व्यक्ति पूरे दिल तथा आत्मा से उपासना व सम्मान के योग्य होता है। जो कोई उसके संपर्क में आता है, आकर्षित हो जाता है, परामार्थ से भर जाता है और आध्यात्मिक मंडलों में यात्रा करने लग जाता है।

तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ।।
संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सरब कुसल तब थीआ।।
संतन बिनु अवरु न दाता बीआ।।
जो जो सरणि परै साधु की सो पारगरामी कीआ।। (610)

(मेरा शरीर, मन और धन सभी सत्गुरु का है। उसी की कृपा से मैंने 'नाम' पाया और मुझे पूर्णता प्राप्त हुई। इस संसार में उससे बड़ा दाता

और कोई नहीं है। जो किसी साधु की शरण में जाता है, वह आसानी से पार उतर जाता है।)

सत्गुरु का आदर्श आध्यात्मिकता है। वह हमारी भाँति शरीर तक सीमित नहीं होता। वह 'शब्द' – सदेह होता है।

शब्द सदेह हुआ और हमारे बीच आकर रहा।

स्थूल शरीर एक कपड़े की तरह है, जो गुरु और शिष्य दोनों को ही आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने पर त्यागना होता है क्योंकि केवल निरोल आत्मा ही आध्यात्मिक मार्ग पर जाती है। लेकिन जब वह स्थूल मंडल में अपने बिछुड़े भाइयों के लिये गुरु के रूप में काम करता है तो उसकी देह भी धन्य है। उस देह में प्रभु प्रकट हुआ होता है और हर इंसान उससे प्रसारित होने वाली रूहानी तरंगों से लाभान्वित होता है। इंसान का अध्यापक इंसान ही हो सकता है और आदर्श मनुष्य सदा बाकी मनुष्यों का आदर्श बना रहा है।

जो इसे बुत – परस्ती मानते हैं, वे सत्गुरु की महानता नहीं जानते। अगर इसे मरदुम – परस्ती (मनुष्य की पूजा) भी कहा जाए तो भी वह 'किताबी पूजा' और 'मूर्ति पूजा' से कहीं अच्छी है क्योंकि यह निम्नतर चेतनता वाले व्यक्ति द्वारा उच्चतर चेतनता वाले महापुरुष की उपासना है। जीवन केवल जीवन से ही आ सकता है, जड़ पदार्थों से नहीं।

महान सूफ़ी कवि हज़रत अमीर खुसरो अपने प्रसिद्ध दोहे में हमें बतलाते हैं :

ख़ल्क में गोयद कि खुसरो बुत परस्ती में कुनद।
आरे आरे में कुनम बा ख़ल्को आलम कार नेस्त।

(लोग कहते हैं कि खुसरो बुतपरस्त हो गया है। हाँ, हाँ, मैं हो गया हूँ; मुझे संसार के लोगों से क्या लेना – देना है।)

आगे, एक दूसरे फारसी कवि अपनी बीमारी की स्थिति में बिस्तर पर पड़े कहते हैं :

अज सरे बालीने मन बरखेज ऐ नादां तबीब,
दर्द मंदे इश्क रा दारू बजुज दीदार नेस्त।

(ऐ अज्ञानी वैद्य! तू मेरे सिरहाने से हट जा। तुम्हें पता नहीं कि प्रेम के रोगी के लिये प्रियतम के दर्शन के अतिरिक्त दूसरा कोई इलाज नहीं है।)

इसी तरह से गुरु नानक ने अपने बचपन में प्रभु – प्रेम के दर्द के समय इलाज करने आये वैद्य से चले जाने को कहा क्योंकि वैद्य उनके दिल का रोग नहीं पकड़ सका:

वैद बुलाइया वैदगी पकड़ टढोले बाहिं।।

भोला वैद न जाणई करकु करेजे माहिं।। (1279)

भक्त और सांसारिक विद्वान में कोई समानता नहीं होती। जिस किसी ने भक्ति – भाव को जाना ही नहीं, वह किसी सत्गुरु के महत्त्व को नहीं समझ सकता जो कि सदेह – परामात्मा होता है और संसार में प्रभु की ज्योति फैलाने आता है।

सच कहें तो गुरु आध्यात्मिक मंजिलों पर आगे बढ़ाने में सहायक होता है, बड़ी भारी रोशनी की मीनार की तरह वह (गुरु) संसार को दिव्य प्रकाश से भर देता है और उस दिव्य प्रकाश के सामने देह का ख़्याल भूल जाता है। आध्यात्मिकता के चाहने वाले जिज्ञासु पतंगों की तरह उसके इर्द – गिर्द इकट्ठे होकर उस की महान पवित्र ज्योति पर

कुर्बान हो जाते हैं।

कबीर साहब फरमाते हैं :

गुरु को मानुष जानते, ते नर मूढ़ गँवार।
भव सागर के भंवर महि, डूबें बारंबार।।
गुरु को मानुष जानते, तन मन अधिक विकार।
गुरु कीया है देह का, कैसे होय उधार।।
गुरु को मानस जानते, भगति भाव क्या होइ।
तरे न तारे आपको, मूढ़ कहावै सोइ।।
गुरु को मानुष जानते, चरणामृत को पान।।
ते नर नरके जायेंगे, जन्म जन्म होयें सुआन।।

अध्याय 12

गुरु महा – मानव अथवा मानव देह में प्रभु होता है

इंसान के रूप में गुरु आदर्श इंसान होता है जिसके अंदर रूहानियत का सूर्य चमकता होता है। वह जीवन का स्रोत होता है। सत्लोक से लेकर नीचे स्थूल मंडल तक के सभी लोकों का, सारी दृश्य एवं अदृश्य सृष्टि का वह सार होता है। जैसे समुद्र को तैर कर पार करना असंभव है, ऐसे ही गुरु को पूरी तरह से जानना असंभव है। पानी में डुबकी लगाने के लिये कोई समुद्र के बीच में नहीं जाता, बल्कि नहाने का काम किसी घाट पर किया जाता है। ऐसे ही पूर्ण पुरुष (गुरु) मालिक की सत्ता का घाट होता है और उसके द्वारा हम प्रभु के प्रेम, प्रकाश और प्रभु की जीवनी – शक्ति का आनंद उठा सकते हैं।

यदि हम पूछें कि उसकी महानता क्या होती है, वह कहाँ से आया है, कैसे आया है और जीवन में उसका उद्देश्य क्या है, तो यही कुछ कहा जा सकता है कि वह सत्लोक से आया है, बीच के मंडलों (तपलोक, जनलोक, स्वर्गलोक, भंवर गुफा आदि) को पार करके इस भूलोक में आया है ताकि अपनी प्रभुता को संसार के दुखी लोगों के सामने प्रकट कर सके।

ऐ संसारी – यातनाओं के भार से दबे सभी लोगो! मेरे पास आओ और मैं तुम्हें विश्राम प्रदान करूँगा।

– मत्ती 11:28 (बाइबल)

परमात्मा का पुत्र वह ढूँढने और बचाने आया है जो खो गया था।

– लूका 19:10 (बाइबल)

मुर्शिदे – क़ामिल (पूरा गुरु) परमात्मा के गुणों का पूर्ण विकसित भंडार होता है। प्रभु की ज्योति उसमें चमकती होती है जिसे वह

मानवता में प्रवाहित करता जाता है। जैसे समुद्र के बीच में लहरें उठती रहती हैं, उसी तरह से प्रभु – प्रेम उसके अंदर ठाठें मार रहा होता है।

इस सबसे बढ़ कर वह जीवन का भी जीवन होता है और उसका सब से बड़ा मिशन यही होता है कि उन सभी जीवों में जिंदगी फूँके जो अभी संसार के माया जाल में बुरी तरह फँसे हुए हैं और प्रभु की ओर से बेखबर हैं। परमात्मा को महा मानव के अंदर भली प्रकार देखा जा सकता है। यह कहा जाता है कि परमात्मा ने इंसान को अपनी ही शक्ल पर बनाया और देवी – देवताओं को उसे नमस्कार करने को कहा।

मौलाना रूम फरमाते हैं :

दर बशर रूपोश कर्द अस्त आफताब।

(उस परमात्मा ने रूहानी सूरज को इंसान में रख दिया है।)

जब कोई व्यक्ति ब्रह्मांडीय चेतनता में ऊपर उठता है तो उसे मालूम पड़ता है कि सत्गुरु ही सारे ब्रह्मांड का केन्द्र बिंदु है। वह सत् देहधारी होता है, ईश्वरीय गुणों से परिपूर्ण होता है और सभी के द्वारा पूजनीय होता है।

वह मानवता का नेता और मार्गदर्शक होता है और उन सभी में महानतम, सर्वोच्च और परिपूर्ण होता है। श्रेष्ठता और अच्छाई उसमें पूर्णतया विकसित होती है। वह परमात्मा का नमूना होता है जो उसके वाइसराय के रूप में काम कर रहा होता है और उसके नियमों को सभी मंडलों (स्थूल, सूक्ष्म और आत्मिक) में लागू करा रहा होता है। वह तीव्र निर्णय शक्ति, अंतरीय दूर – दृष्टि और विवेकशक्ति से संपन्न होता है। संभव है कि वह अनपढ़ हो, फिर भी वह सब से अधिक बुद्धिमान होता है। इंसान के रूप में वह सभी पवित्र लोगों से पवित्रतम होता है तथा सबसे अधिक प्रिय होता है। उसका प्रेम सभी समाजों, देशों, राष्ट्रों और

कौमों से बहुत ऊपर होता है। उसका अपना आपा पूरी मानवता तक फैला होता है। वह विश्व – नागरिक होता है और सभी के भले की बात कहता है। संक्षेप में, वह परमात्मा का नियुक्त किया हुआ अपना डिप्टी, एक कदम नीचे, उसी का रूप होता है जो उसके प्रेम, ज्योति और जीवन को भूली हुई मानव – जाति के साथ बाँटने के लिये आता है।

इस संसार में वह दूसरे व्यक्तियों की भांति ही रहता है पर संसार में रहता हुआ भी वह संसार से निर्लेप रहता है। सब जीवों के लिए उसका प्रेम उनके माता – पिता के प्रेम से भी अधिक होता है। वह हमारी कमियों को देख कर भी अनदेखा कर देता है और उन कमियों से ऊपर उठने में प्रसन्नतापूर्वक सहायता करता है। ईसा मसीह की भाँति कृपा से भरपूर वह मानव पुत्र अपने कष्टों की परवाह किए बिना भूली आत्माओं को वापस निजधाम ले जाने के लिए अनथक परिश्रम करता जाता है।

वह मनुष्य जैसा दिखाई देता है पर वह केवल मनुष्य से ही नहीं, वास्तव में महा मानव से भी कहीं ऊपर होता है। वह शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक हर पहलू से पूर्ण होता है क्योंकि वह परमात्मा का रूप होता है। पूर्ण समर्थ होते हुए वह विनम्र से विनम्र होकर काम करता है। उसमें शक्ति के साथ दीनता, बुद्धि के साथ प्रेम और महानता के साथ विनम्रता का अद्भुत मेल दिखाई देता है।

सत् का गुरु होने के कारण वह महा – मानव से भी बहुत बढ़ – चढ़कर होता है। उसका साम्राज्य शुद्ध आध्यात्मिक मंडलों तक फैला हुआ होता है, जो समय, सीमा और कारण के मानवीय बंधनों से मुक्त होता है। वह अपनी इच्छानुसार अपने स्थूल शरीर को छोड़ कर सूरज और चाँद को पार करके सूक्ष्म और कारण मंडलों के पार पारब्रह्म तथा उससे भी ऊपर जा सकता है।

इतने आविष्कारों और भौतिक उन्नति के बाद भी विज्ञान आज अंधकार में भटक रहा है। सभी वैज्ञानिक खोजें अभी तक भौतिक जगत तक ही सीमित हैं जिस में वैज्ञानिक अपनी पूरी मानसिक और नैतिक शक्ति के साथ लगातार कार्य करते जा रहे हैं लेकिन उन्हें ऐसे बहुत से मंडलों का कोई अंदाज़ा भी नहीं है जिनमें कि सत्गुरु अपनी मौज और मर्जी से आ जा सकता है।

जो लोग सत्गुरु की शिक्षाओं पर भरोसा करते हैं और उसके हुक्म के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं, वे उन मंडलों को स्वयं देख सकते हैं। सभी संत एक ही बात कहते हैं:

परमात्मा का साम्राज्य हमारे अंदर है।

क्राइस्ट हमें बतलाते हैं:

प्रभु का साम्राज्य बाहर महसूस करने से नहीं आता और न ही लोग ऐसा कहेंगे कि वह यहाँ है या वह वहाँ है क्योंकि देखो! परमात्मा का साम्राज्य तुम्हारे अंदर है। *- लूका 17:20 (बाइबल)*

और गुरवाणी में हमें मिलता है :

घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही।।
बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अंदरि भाई।। (425)

(सब कुछ तुम्हारे अंदर है और बाहर कुछ नहीं है। ऐ भाई! जो परमात्मा रूपी हीरे को बाहर ढूढँते हैं उनकी खोज व्यर्थ जाती है।)

सभ किछु घर महि बाहरि नाही।।
बाहर टोलै सो भरमि भुलाही।। (102)

(सारा रूहानी ज्ञान शरीर के अंदर है, बाहर नहीं। जो बाहर ढूँढता

है, वह भ्रम में भूला हुआ है।)

यह मानव – तन सच्चा हरि – मंदिर है। यही सच्चा गिरजा, मस्जिद या पूजागृह है जो प्रभु के हाथों से बना है परन्तु कितने अफसोस की बात है कि हम प्रभु को इंसानी हाथों से बनाए गए ईंट – पत्थरों के पूजा स्थलों में ढूँढ़ते हैं। जो मन को काबू करना तथा आत्मा की प्रयोगशाला में प्रयोग करना जानते हैं, वे अंतर में अद्भुत नूरी दृश्यों को देख सकते है तथा दिव्य संगीत के रागों को सुन सकते हैं।

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला।।
काइआ अंदरि जग जीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला।।
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा।।
इसु काइआ अंदरि नउ खंड पृथमी हाट पटण बाजारा।।
इसु काइआ अंदरि नामु नउनिधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा।।
(754)

(सब कुछ इस शरीर के अंदर ही है – खंड, मंडल, पाताल। इसी शरीर में जीवन दाता है जो सबका प्रतिपालक है। इसी में रूहानियत के रत्न – पदार्थ हैं जो एक भक्त बहुतायत में पा सकता है। सारा ब्रह्मांड ही पिंड में स्थित है। यदि कोई व्यक्ति सत्गुरु के हुक्म के अनुसार जीवन धारण कर सके तो वह इस तन के अंदर 'नाम' को पा सकता है।

महान दार्शनिक सन्नाई साहब हमें बतलाते हैं :

आसमाँ आस्त दर दलायते जाँ,
कार फ़रमाए आसमाने जहाँ।
दर रहे रूह पस्त व बाला हास्त,
कोहहाए बलंद व दरिया हास्त।

(मानव शरीर में अनगिनत लोक और शक्तियाँ हैं जो क्रमबद्ध कार्य

करती जाती हैं। आत्मा को बहुत से ऊँचे और नीचे मंडलों, पहाड़ों और नदियों एवं घाटियों को पार करना होता है। ऐसे बहुत से मैदान, समुद्र, जंगल और पहाड़ हैं जिनके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता। इस महान सृष्टि के सामने यह विश्व एक छोटे से कण के समान लगता है।)

मानव शरीर (पिंड) परमात्मा का मंदिर होने के कारण इस महान सृष्टि (ब्रह्मंड) का एक नमूना है और जो कोई अंदर जाता है, वह वास्तव में सृष्टि के रहस्यों का जानकार हो जाता है :

जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै।। (695)

असल में इंसान बहुत महान है क्योंकि उसके अंदर अनगिनत दातें रखी हुई हैं; यहाँ तक कि सारा ब्रह्मांड ही इंसानी शरीर में मौजूद है लेकिन हम बाहरी आवरण (शरीर) को ही देखते रहते हैं और जो शक्ति इसके पीछे काम करती है, उस के बारे में भूल जाते हैं। हम शरीर को रोटी-पानी देते हैं, इसका पालन-पोषण करते हैं परंतु इसके मूल (आत्मा) को पानी नहीं देते। सृष्टि के वृक्ष की जड़ें सूक्ष्म मंडलों में हैं जहाँ अंतर्मुख होने के बाद ही हम पहुँच सकते हैं।

निश्चय ही मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई भी परमात्मा के साम्राज्य में एक छोटे बच्चे जैसा सरल-स्वभाव होकर नहीं जाना चाहेगा, वह उसके अंदर प्रवेश नहीं पा सकेगा।

- मार्क 10:15 (बाइबल से)

लेकिन दुर्भाग्य से हम कभी अंदर झांकते तक नहीं क्योंकि हम छोटे बच्चे जैसा सरल-स्वभाव बनाना नहीं चाहते। एक महान दार्शनिक एमर्सन भी हमें 'अंतर में खटखटाने' को कहता है। बर्गसन

भी कहता है कि हम अंतर में 'छलाँग लगाएँ' ताकि समस्त ज्ञान के स्रोत तक पहुँच जाएँ।

हम अंदर किस प्रकार जा सकते हैं, अंदर कैसे खटखटा सकते हैं या ईसा के शब्दों में 'छोटे बच्चे' कैसे बन सकते हैं, सिद्धांत रूप में भी (अपने वचनों द्वारा) तथा व्यवहारिक रूप में भी (निजी अनुभव द्वारा), सत्गुरु हमें इसकी विधि विस्तार से समझाता है। इतना ही नहीं, सत्गुरु विभिन्न रूहानी मंडलों में रूह के अंग संग रहता है, उसका मार्गदर्शन करता है।

संत आध्यात्मिक जगत के वैज्ञानिक होते हैं और पराविद्या के गुरु होते हैं, परे की विद्या अर्थात् जिसका ज्ञान तर्क और बुद्धि से बहुत परे हो तथा जिसे सीखने या जानने के लिये अंतरीय दृष्टि की आवश्यकता हो।

यह इंद्रियों से परे का ज्ञान है जिसे आधुनिक मनोवैज्ञानिक खोजकर्ता Extra-Sensory Perception (ESP) कहते हैं। डॉक्टर जे.डी. राईन अपनी पुस्तक 'माइंड एंड दी न्यू वर्ल्ड (मन और नई दुनिया)' में हमें बतलाता है कि मनोवैज्ञानिकों ने अपनी खोजों के द्वारा पता लगाया है कि ऐसी 'कोई चीज़' मनुष्यों के अंदर काम कर रही है जो भौतिक नियमों से ऊपर है।

सत्गुरु उस खास चीज़ की पूरी जानकारी रखता है और इंद्रियों से परे का पूरा ज्ञान प्रदान कर सकता है, जैसे कि आँखों का डॉक्टर ऑप्रेशन करके आँखों की ज्योति प्रदान कर सकता है। महात्मा बुद्ध की तरह सत्गुरु हमें बतलाता है कि भौतिक जीवन कष्टों से भरा हुआ है, पर इसके परे अनगिनत सूक्ष्म मंडल हैं जहाँ हमें ज्योति ही ज्योति मिलती है, आनंद ही आनंद मिलता है। वह प्रतिदिन उन मंडलों में जाता है और वहाँ के अपने अनुभव के बारे में हमें बतलाता है। जो उसके

आदेशों का पालन करते हैं और मन की प्रयोगशाला में प्रवेश कर उसके मार्गदर्शन में सूक्ष्म मंडलों को देखते हैं जिस तरह कि हम स्थूल जगत को देखते हैं, उनके अनुभव और नतीजे वैसे ही पक्के और ठोस होते हैं जैसे कि दो और दो चार होते हैं।

अध्याय 13

सत्गुरु और जीवों की निजघर वापसी

संत–सत्गुरु अपने आध्यात्मिक निवास से निकल कर जीवों को अपने घर वापस ले जाने के लिये आता है।

मेरे पास कोई नहीं आ सकता जब तक कि मेरा पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे न खींचे। – *जान 6:44 (बाइबल)*

हमारी आत्मा की ज़ात वही है जो परमात्मा की है। उस आनंद के सागर से अलग होने के कारण यह तन– मन के जेलखाने में कैद हो गई है। संत अपने आत्मिक निवास सत्लोक से निकल कर आत्माओं को निज–घर वापस ले जाने के लिए आते हैं।

वास्तव में परमात्मा स्वयं ही इंसान का रूप धारण करके आता है ताकि जीवों को काल के पंजे से छुड़ा सके। यह उस महान समझौते या नियम के अंतर्गत ही है कि इंसान का अध्यापक इंसान ही होता है जो उसे सच्ची मुक्ति का रास्ता दिखाता है और उसे खुशी–खुशी अपने निज–घर वापस ले जाता है।

जब मुर्दे परमात्मा के पुत्र (सत्गुरु) की आवाज़ सुनेंगे ...जो सुनेंगे वे जीवन पायेंगे।

जान 5:25 (बाइबल)

जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ।। (678)

(जिसने तुम्हें संसार में भेजा था वही तुम्हें लेने आ गया है। तुम अपने देश को चलो जहाँ सहज अवस्था की प्राप्ति होती है।)

परमात्मा से एकमेक होने के कारण वे संसार में उसकी आज्ञा से उसके प्रतिनिधि बनकर आते हैं और जीवों को निज–घर ले जाने के नियमों के अनुसार उन्हें निज–घर ले जाते हैं। उनका यही ऊंचा मिशन

(उद्देश्य) होता है और वे शान से उसे पूरा करते हैं। शम्स तबरेज अपने बारे में हमें बतलाते हैं :

तू चह दानी कि मा चह मूर्गानेम,
हर नफ़्स ज़रे लब चह मेख़्वानेम।
गर बसूरत गदाए ई कुएम,
बसिफ़त बीं कि मा चह सुलतानेम।
गरचह मा मुफ़लसेम दर ज़ाहर,
तू बबातन निगर कि मा कानेम।
चूँ कि मा खुद शहेम डर हमा मिसर,
चह गम इमरोज़ गर बज़ंदानेम।
कै बमानेम अन्दरीं खाना,
चूँ दरीं ख़ाना जुमला मेहमानेम।
क़ौलहा करदा एम बा शहे ख्वेश,
हेच ज़आं क़ौल रू न गरदानेम।
ता दरीं खारक़ह एम अज़ कस मा,
हम नरंजेम व हम नरंजोनम।
हमचू फ़िरदौस पुर ज़ नूरो नएम,
खुरम ओ खुशदिलेम ओ ख़ंदोनम।

(तुम क्या जानो कि हम किस आकार के पक्षी हैं और हर समय क्या गाते रहते हैं? हम भिखारी बेशक लगते हों परंतु हमारे गुणों को देखो, हम कैसे बादशाह हैं। हम गरीब बेशक लगते हों लेकिन हम सबसे बड़े दौलतमंदों से भी ज़्यादा दौलतमंद हैं। जब हम बादशाहों के भी बादशाह हैं तो इस संसार के कैदखाने में अपने अल्पकालीन प्रवास की परवाह क्यों करें? हम तो यहाँ पर तीर्थयात्री की तरह हैं और बहुत देर यहाँ हम रह भी नहीं सकते। हमारा परमात्मा के साथ एक इकरार हुआ है और हमें उसे पूरा निभाना है। जब तक हम इस जिस्म में हैं हम किसी से नाराज़ नहीं होते और न ही किसी को नाराज़ करते हैं। हम दिव्य

लोकों की तरह प्रकाशमान हैं और अपने होंठों पर सदा मुस्कराहट लिये प्रसन्न हृदय से जीवित रहते हैं।)

इसी तरह से गुरु गोबिंद सिंह हमें बतलाते हैं :

दो ते एक रूप होइ गयो।
चित्त न भयो हमरो आवन को।
ज्यों त्यों कहि कै मोहि पठायो।।

(मैं दो या द्वैत को दूर करके मालिक में एकरूप हो गया था। उसे छोड़ कर मेरा इस संसार में वापस आने को दिल नहीं करता था, लेकिन परमात्मा के हुक्म के आगे मुझे झुकना पड़ा और मुझे दोबारा इस संसार में आना पड़ा।)

कबीर साहब भी फरमाते हैं:

कहे कबीर हम धुर के भेदी, लाये हुकम हजूरी।

(कबीर फरमाते हैं कि हम परमात्मा के परम पवित्र धुरधाम से उसका हुक्म सुनाने आए हैं।)

पवित्र बाइबल में भी आता है :

मैं अपने आप कुछ नहीं करता, जैसा मेरे पिता ने मुझे सिखलाया है, मैं वैसी बातें कहता हूँ। – *जान 8:28*

गुरवाणी में भी हमें ऐसे ही उल्लेख मिलते हैं :

जैसी मै आवै खसम की बाणी, तैसड़ा करी गिआन वे लालो।।
(722)

(ऐ लालो! मैं अपने आप कुछ नहीं कहता। जैसा परमात्मा कहलवाता है, मैं वही कुछ कहता हूँ।)

नानक दास बुलाया बोले।

(नानक वही बोलता है जो परमात्मा उससे बुलवाना चाहता है।)

अध्याय 14

सत्गुरु और उसका मिशन

दुखी मानवता के लिए हमदर्दी के कारण संत–सत्गुरु संसार में आते हैं।

संसार के दुखों से दबे मेहनतकश लोगो! मेरे पास आओ और मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। – मत्ती 11:28 (बाइबल)

क्योंकि उन्हें इस दुनिया में मनुष्यों के बीच रह कर काम करना होता है इसी लिये वे तन–रूपी चोले को धारण करते हैं।

प्रभु इसलिए मल–मूत्र का इंसानी जामा पहन कर आता है ताकि वह नाज़ुक हो कर कष्टों को महसूस कर सके। – जॉन डॉन

लेकिन उनका संसार में आने और यहां से जाने का तरीका हम लोगों से अलग होता है। वे अपनी इच्छा से आते जाते हैं जब कि हम लोग असहनीय कर्मों के बोझ से आते–जाते हैं जैसे कि कैदी जेल में कोई कानूनी सजा भुगतने के लिये आता है। वे मानवता के भले के लिये आते हैं। वे आत्माएँ जो अमर जीवन पाने को तरसती हैं, उन्हें वे अमर जीवन–ज्योति देने आते हैं। वे हमेशा जिस्म की कैद से आज़ाद होते हैं तथा हमारी आत्माओं के रक्षक बन कर आते हैं।

जो स्वस्थ हैं उन्हें वैद्य की आवश्यकता नहीं परंतु जो बीमार हैं, उन्हें उसकी आवश्यकता पड़ती है। जो शुद्ध आचरण रखते हैं, मैं उन्हें बुलाने नहीं, बल्कि जो पापी हैं उन्हें पश्चाताप कराने आया हूँ।

– मार्क 2:17 (बाइबल)

जनम मरण दोहू में नाही जन परउपकारी आए।।
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैण मिलाए।। (749)

(जीवन और मृत्यु से उन्हें कोई अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि वे पापियों के रक्षक बन कर आते हैं, वे अपनी ज़िंदगी का अंश अपने शिष्यों में डाल कर उन्हें प्रभु से मिला देते हैं।)

संत महापुरुष इस धरती पर सबसे बड़ा दाता होता है, उसका काम सबसे महान होता है। वह आत्माओं को मन और माया के जेलखाने से छुड़ाने आता है ताकि वह निज देश से निकाली हुई आत्माओं को वापस उनके देश पहुँचा दे और उनकी खोई हुई शान वापस दिला दे।

एक परोपकारी व्यक्ति किसी कैदखाने में कैदियों को स्वादिष्ट भोजन प्रदान करा सकता है, दूसरा उन्हें मिठाइयाँ खिला सकता है, तीसरा परोपकारी व्यक्ति उन कैदियों को अच्छे कपड़े और रहने का बेहतर प्रबंध करा सकता है और इसी तरह दूसरे अन्य दयालु व्यक्ति उन कैदियों को और अन्य किस्म की सुविधाएँ दिला सकते हैं। निःसन्देह उन में से प्रत्येक उन कैदियों के कष्टों को मिटाने में हाथ बँटाता है।

लेकिन अगर कोई आकर जेल का गेट खोल कर उन कैदियों को कहे कि तुम कैद की इस मुसीबत से निकल कर आज़ाद होकर भाग जाओ तो स्वाभविक ही उसका परोपकार उन सभी के परोपकारों से बड़ा होगा।

संत–सत्गुरु का मिशन ठीक ऐसा ही होता है। वह हमारे सामने खोए हुए साम्राज्य को प्रकट करता है और उस स्वर्ग में प्रवेश की अनुमति दिलाता है जहाँ से आदम और उसकी संतानों को परमात्मा के मूल आदेश का उल्लंघन करने के कारण बाहर निकाल दिया गया था।

मनुष्य को स्वर्ग के बागीचे से अपमानित करके निकाला गया और इंसान के बेटे (सत्गुरु) के अलावा कोई अन्य उसकी इज्जत बहाल

नहीं करा सकता और उसको पिता (प्रभु) के सामने नहीं ले जा सकता। मनुष्य के पापों की ज़िम्मेवारी वह अपने ऊपर ले लेता है, उसकी सभी कमियों को वह धो डालता है और अपना जीयादान देकर वह उसे ब्रह्मांडीय चेतनता में जागृत कर के अमर जीवन प्रदान कर देता है। जो परमात्मा के पुत्र (सत्गुरु) पर विश्वास करेगा, उसे अमर जीवन प्राप्त होगा।

– जान 3:36 (बाइबल)

अध्याय 15

गुरु और उसका काम

सत्गुरु कल्पवृक्ष (संकल्प करते ही फल देने वाला वृक्ष) के समान होता है। अमीर–गरीब और ऊँच–नीच, सभी उसके दर पर कुछ न कुछ माँगने आते हैं। फिर भी उसकी सबसे बड़ी खुशी इस बात में छुपी रहती है कि वे तन–मन के बंधनों से आज़ाद हो जाएँ। बाहर से किसी एक धर्म समाज से जुड़ा होकर भी वह सब लोगों की आत्मिक ज़रूरतों पर ध्यान देता है।

वह न तो किसी प्रचलित धर्म का खंडन करता है और न ही नया धर्म बनाता है। वह परमात्मा के नियमों को तोड़ने नहीं, बल्कि उन्हें पूरा करने आता है। वास्तव में सभी 'वाद' (रूहानी) उससे शक्ति और सहारा प्राप्त करते हैं।

वह अपने अनूठे प्यार भरे तरीके से प्रत्येक इंसान को ऐसे रास्ते से ले जाता है जिसमें सबसे कम मुश्किलें हों। वह किसी व्यक्ति के मत, विश्वास व विचारों में हस्तक्षेप नहीं करता, चाहे वे कैसे भी हों और न ही वह सामाजिक तौर–तरीकों में रुकावट डालता है। वह केवल आत्मा की बात करता है; इसके क्या गुण हैं, शरीर में इसका ठिकाना कहाँ है, आत्मा कैसे कार्य करती है, इसमें क्या क्या क्षमताएँ छुपी हैं, कैसे यह तन–मन के बंधनों से आज़ाद हो सकती है और कैसे बाहर से हट कर और अंतर्मुख होकर परमात्मा की तरफ जा सकती है?

वह सीधा आत्मा का आह्वान करता है और उसके शब्द आत्मा की गहराइयों में उतर जाते हैं। वह नकद पूँजी का व्यापार करता है और लोगों को उधार या मरने के बाद मुक्ति का दिलासा नहीं देता। वह

सिखलाता है :

जब लग न देखूँ अपनी नैनी। तब लग न पतीजूँ गुरु की बैनी।।

– कबीर

(जब तक अपनी आँखों से न देख लो, गुरु के कहे पर भी विश्वास मत करो।)

शुरू में तो हमें प्रयोग के तौर पर गुरु की बातों को स्वीकार करना पड़ता है लेकिन जब हम वास्तविक साधन–अभ्यास द्वारा उसके कथनों की सच्चाई को स्वयं अनुभव कर लेते हैं तो हमारा विश्वास दृढ़ हो जाता है।

एक बार जब व्यक्ति सूर्य के प्रकाश को देख लेता है तो वह सूर्य के अस्तित्व को नकार नहीं सकता, चाहे दुनिया भर के चमगादड़ एकजुट होकर सूर्य के अस्तित्व को नकारते रहें।

जब तक अंतर की आँख नहीं खुलती सच्चाई प्रकट नहीं होती और देहधारी आत्माएँ अंधकार और अज्ञान में भटकती रहती हैं।

जब भी सत्गुरु संसार में आता है, रूहानियत के भूखे–प्यासे लोग उसके इर्द–गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं और उस जीवन के अमृत और दिव्य अन्न से अपनी भूख–प्यास बुझाते हैं जिसे सत्गुरु दोनों हाथों से मुफ्त बाँटता है।

धीरे–धीरे उनकी प्यास एक सतत् भक्ति में बदल जाती है जिससे सत्गुरु की दया उन्हें पहले से अधिक मिलने लगती है और जीवों को जल्दी निज घर जाने की यात्रा में सहायता प्रदान करती है।

अध्याय 16

गुरु और उसका कर्तव्य

सत्गुरु के कर्तव्य और दायित्व अनगिनत हैं। उसका सबसे बड़ा कर्तव्य जीवों को सृष्टिकर्ता के साथ जोड़ना, उनके लिये परमात्मा की बादशाहत को प्राप्त कराना और युगों–युगों से भूली हुई उनकी पुरातन विरासत को उन्हें वापस दिलाना है। यह काम वह 'शब्द' या 'नाम' के द्वारा करता है जिस पर सवार होकर आत्मा अपने निज–घर में पहुँच जाती है।

विद्युत–चुंबकीय (Electro-magnetic) तरंगों की भाँति 'शब्द' या 'नाम' हर जगह धुनकार रहा है लेकिन दुर्भाग्यवश इस भूमंडल पर मन–माया के ज़बरदस्त असर की वजह से हम इसे महसूस नहीं कर पाते और इस से फायदा नहीं उठा पाते।

सत्गुरु अपने निजी मार्गदर्शन द्वारा आत्मा को माया के बंधन से आज़ाद कराता है, इसे इंद्रियों के घाट से हटाता है, इसकी बिखरी हुई तरंगों को सिमेट कर दो भौंवों के बीच और पीछे इसके ठिकाने पर एकत्र करता है जिससे इसे परमात्मा की ज्योति को देखने और परमात्मा की ध्वनि को सुनने का कुछ अनुभव मिल जाता है; जिसे लगातार अभ्यास द्वारा विकसित किया जा सकता है।

तब जीव अपने आप को 'शब्द–ध्वनि' की आकर्षण शक्ति से खिंचा हुआ पाता है जो धीरे–धीरे उसे आखिरी मंज़िल की तरफ ले

जाती है। महापुरुषों के इस आत्मविज्ञान को केवल बुद्धि के स्तर से समझ लेना काफी नहीं और इंसान कितना ही बुद्धिमान क्यों न हो, मात्र बौद्धिक जानकारी से इस रास्ते पर कोई फायदा नहीं पहुँच सकता।

सदाचारी जीवन अध्यात्म की मंज़िल की ओर पहला कदम है। प्रभु के बाद दूसरा दर्जा पवित्रता को दिया जाता है। इसलिये सत्गुरु का सबसे पहला काम है इंसान को असली मायनों में इंसान बनाना। मन, वचन तथा कर्म से पवित्रता आवश्यक है। क्योंकि आत्मज्ञान प्रभुज्ञान से पहले आता है, इसलिए सत्गुरु शुरू में अध्यात्म का सैद्धांतिक ज्ञान भी देता है और उसका निजी अनुभव भी, ताकि आत्मा तन-मन के बंधनों से मुक्त हो सके।

धीरे-धीरे आत्मा इस लायक हो जाती है कि अपने ऊपर चढ़े विभिन्न पर्दों को हटा कर फेंक सके और तब यह माया से रहित हो जाती है और कह उठती है—''मैं आत्मा हूँ।''

इसके पश्चात् ही प्रभु-ज्ञान की ट्रेनिंग मिलती है जो इस आत्म-ज्ञान का शिखर और चरमोत्कर्ष है और जो आत्मा की प्रभु-प्राप्ति में सहायता करता है।

जब गडरिया (गुरु) अपनी खोई हुई भेड़ों को अपनी शरण में ले लेता है तो उनकी सारी जिम्मेंदारियाँ भी अपने ऊपर ले लेता है। सत्गुरु सदा के लिये सत्गुरु होता है— यह सिद्धांत है। जो पृथ्वी पर सत्गुरु है, वह विभिन्न मंडलों— सूक्ष्म, कारण और उससे परे भी सत्गुरु होता है। जब तक वह आत्मा को सुरक्षित रूप से परमात्मा के दिव्य लोक में नहीं

पहुँचा देता तब तक वह चैन से नहीं बैठता।

निज घर जाना और आध्यात्मिक मार्ग पर उन्नति कराना पूरी तरह सत्गुरु की मर्ज़ी पर निर्भर करता है और प्रभु की ओर उठने वाले हर कदम और लगने वाले समय का फैसला केवल वही करता है।

जिस क्षण आत्मा सूक्ष्म मंडल में पहुँचती है और सत्गुरु के नूरी स्वरूप का दर्शन करती है, तब जीव के करने के लिये कुछ नहीं बचता। इसके बाद सारा काम सत्गुरु का रह जाता है।

इसके अतिरिक्त सत्गुरु ज्योति पुत्र होता है और जैसे तूफानी समुद्र में रोशनी की मीनार अपनी तेज रोशनी से मदद करती है, वैसे ही संसार भर के ऊपर वह अपनी कृपामयी ज्योति बिखेरता रहता है। अच्छे गडरिये की तरह उसे भी अनेक शिष्यों (भेड़ों) की देखभाल करनी होती है। जिस किसी का भी सत्गुरु से संपर्क होता है, अंत में उसे भी इस रास्ते पर चलने के लिये तैयार किया जाता है और आखिर तक उसे सत्गुरु की सहायता मिलती रहती है।

अध्याय 17

गुरु मानव तन में प्रभु होता है

गुरु वास्तव में प्रभु का प्रकट रूप होता है। वह प्रभु की दिव्य ज्योति से परिपूर्ण होता है और उसे संसार में फैलाता है। वह ऐसा ज्योति – स्तंभ होता है जिस में परमात्मा प्रकट होकर जीवों के उद्धार की योजना को प्रैक्टीकल रूप देता है। परमात्मा ने इंसान को अपने जैसा बनाया लेकिन उसने अपने और आत्मा के बीच एक वज्र कपाट रख दिया और ऐसा परमात्मा के आदेश के सर्वप्रथम उल्लंघन के कारण हुआ। इस तरह से इंसान को निज – धाम या अदन के बाग (Garden of Eden) से निकाला गया और स्थूल संसार में भेजा गया ताकि वह मेहनत से अपनी रोज़ी रोटी कमा सके और किसी महान मानव पुत्र की मदद से मुक्ति का रास्ता पा सके ऐसा महान मानव पुत्र, जिसके रूप में स्वयं परमात्मा अवतरित हो कर अपनी खोई हुई जीवरूपी भेड़ों को वापस निज – घर ले जाने आता है।

'शब्द' शरीर धारण करता है और हमारे बीच निवास करता है। परमात्मा की ज्योति उसकी आँखों से चमकती है, उसके गले से परमात्मा बोलता है और जिनको परमात्मा को पाने की तड़प होती है उन्हें उसके द्वारा बन्धन से मुक्ति मिलती है। एक साधारण इंसान की तरह वह हमारे बीच रहता है, हमारे सुख – दुख का साथी बनता है, हमें आध्यात्मिकता की हिदायतें देता है और आध्यात्मिक रास्ते पर हमारा मार्गदर्शन करता है। परमपिता से एकमेक होने के कारण प्रभु ही उसके द्वारा काम करता है।

मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई इंसान बिना पिता के पुत्र को नहीं जानता, और कोई इन्सान पिता को नहीं जानता, बिना पुत्र के और उसके, जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे।

– मत्ती 11:27 (बाइबल)

मौलाना रूम भी फरमाते हैं :

चूँ कि करदी ज़ाते मुर्शिद रा क़बूल,
हम खुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल,
दो मदाँ व दो मबीं व दो मख़ाँ
ख़्वाजह रा दर ख़्वाजाए खुद महव दाँ,
गर जुदा बीनी ज इक ई ख़्वाजह रा,
गुम कुनी हम तन व हम दीबाचारा,
पीर व हक रा दोज – अहवली हर कि दीद
ऊ मरीद़ अस्त दर हक़ीकत ने मुरीद।

(अगर तूने मुर्शिद की ज़ात को कबूल कर लिया तो उसमें खुदा और रसूल, मध्यस्थ दोनों आ गए, दोनों में कोई अंतर नहीं। अगर तू मुर्शिद को खुदा से अलग समझेगा तो भटक जाएगा और परमार्थ के मूल तत्त्व को खो देगा। जो मुर्शिद को खुदा से अलग मानता है, उन्हें दो समझता है, वह मरीद अर्थात् मरा हुआ है, मुरीद अर्थात् शिष्य नहीं।)

सत्गुरु निर्गुण व अरूप परमात्मा का रूप होता है – वह ऐसा स्वरूप है जिसे हम देख सकते हैं और जिसके साथ संबंध जोड़ सकते हैं। यही स्वरूप हमें परमात्मा का ज्ञान प्रदान करता है और यही स्वरूप अपने नूरी रूप में परमात्मा की तरफ जाती आत्मा के साथ चलता है और उसका मार्गदर्शन करता है।

हर मंडल में — स्थूल, सूक्ष्म, कारण और उससे भी परे, सत्गुरु की शान बढ़ती जाती है और जैसे – जैसे आत्मा दिव्य मंडलों में चढ़ाई करती जाती है, उसे सत्गुरु के असीम अधिकार क्षेत्र और शक्तियों का अधिक से अधिक आभास होता जाता है।

क्योंकि वह खुदा का अवतार होता है, इसलिए वही मुसलमानों का

किबला और काबा है, ईसाईयों का गिरजा है, यहूदियों की अमर ज्योति है, वही मंदिर है, यहूदी प्रार्थना भवन (Synagogue) और गुरद्वारा है, क्योंकि वही एक-मात्र पूजनीय है।

जैसे बिजली वातावरण में सर्वत्र भरी होती है, उसी तरह से परमात्मा भी समस्त ब्रह्मांड में व्याप्त है। ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ वह न हो और फिर भी वह नज़रों से ओझल है, छिपा रहता है। गुरु या सत्गुरु वह शक्तिशाली स्विच या मुख्य-स्रोत होता है जिसके द्वारा हम भी उस प्रभु की शक्ति की, उसकी महानता की एक झलक पा सकते हैं।

संक्षेप में, सत्गुरु वह पोल होता है जिस पर परमात्मा सच में काम करता है, इसलिये उसे सदेह-प्रभु कहें तो उचित ही होगा। यह परमात्मा की उस गुप्त अवस्था से भिन्न है जो सर्वत्र विद्यमान है जिसे हम जानते नहीं।

परमात्मा की महानता व पवित्रता सत्गुरु में पूरी तरह प्रकट होती है। जब तक कोई व्यक्ति किसी सत्गुरु के संपर्क में नहीं आता, उसके लिए परमात्मा मात्र एक विचार ही रहता है, एक ऐसी छाया जिसका वास्तव में यथार्थ न हो।

सत्गुरु इस धरती पर चलता-फिरता प्रभु होता है। वह हमारे साथ बातें करता है, हमारे साथ मुस्कराता है और अपने शब्दों और निजी उदाहरणों द्वारा हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन करता है। वह आत्मा धन्य है जो किसी जीवित सत्गुरु से जुड़ जाती है—इंसान के लिये यह परमात्मा की सबसे बड़ी भेंट होती है।

वास्तव में इंसान ही इंसान का अध्यापक (गुरु) होता है। जब तक कोई सत्गुरु हमें दिव्य ज्योति न दे, हम प्रभु को नहीं पा सकते और अंधे व्यक्ति की भाँति घोर अंधकार में भटकते रहते हैं।

स्थूल संसार में हम इन स्थूल आँखों से अपने इर्द-गिर्द के स्थूल पदार्थों के अतिरिक्त और कुछ नहीं देख सकते। सूक्ष्म दृष्टि से ही सूक्ष्म संसार देखा जा सकता है और कारण दृष्टि से कारण जगत देखा जा सकता है। तीनों लोकों तथा उससे भी परे का मालिक होने के कारण गुरु वह अंतरीय ज्योति प्रदान करता है जो अंतरीय अंधकार को दूर कर देती है और तब व्यक्ति दिव्य मंडलों के अनंत मनोरम दृश्य देखने लगता है जो दिन-प्रति-दिन बढ़ते जाते हैं और हर कदम पर प्रसन्नता लाते हैं। ये सभी काम वह शब्द ध्वनि या परमात्मा की आवाज़ के द्वारा करता है जिसे सुन कर मुर्दों में जान पड़ जाती है और वे अनंत जीवन पा जाते हैं। वह परमात्मा और जीवात्मा को जोड़ने वाला यंत्र होता है। उसकी जड़ें प्रभु से जुड़ी होती हैं और शाखाएँ सारे संसार में फैली होती हैं। ये शाखाएँ दिव्य फलों-फूलों से भरी होती हैं और इनके द्वारा वह अपने पास आने वाले हर इंसान को आध्यात्मिक खुराक देता है।

इसके बारे में मौलाना रूम फरमाते हैं :

दिला नज़्दे कसे बिनशीं कि आवाज़े दिल ख़बर दारद।
बज़ेरे आँ दरख़्ते रौ कि ऊ गुलहाय तर दादर।
दरीं बाज़ारे अत्ताराँ मरो हर सू चू बेकाराँ।
बदुकाने कसे बिनशीं कि दरे वै अंगबीं दारद।

(ऐ मित्र ! किसी ऐसे की नजदीकी अख़्तियार कर जिसे तेरे दिल की हालत का पता हो। थोड़ी देर किसी ताज़ा सुंगधित फूलों से लदे छायादार पेड़ के नीचे बैठ कर आराम कर। बाज़ार में आवारा पशुओं की तरह दर-दर मत भटक। सीधा उसके पास जा जिसके पास शहद का पूरा भंडार हो।)

दामने ऊ गीर ऐ यारे दलेर,
कऊ मनज़्ह बाशिद अज़ बालाओ ज़ेर।
बातो बाशिद दर मकानो लामकाँ,
चूं बिमानी अज़ सराओ अज़ दुकाँ।

(ऐ बहादुर आत्मा! किसी ऐसे के पल्ले को ज़ोर से पकड़े रख जिसे हर मुकाम का ठीक-ठाक पता हो, जो सदा तुम्हारा दोस्त बना रहे, इस ज़िंदगी में भी और मर कर भी, इस संसार में भी और अगले में भी।)

सत्गुरु का स्थूल रूप या सूक्ष्म नूरी स्वरूप, जो प्रभु प्राप्ति की यात्रा में हमारी सहायता करता है, वह परमात्मा के अलख, अगम, अगोचर रूप से बहुत बेहतर होता है।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईश्वर (निरजंन) और परमेश्वर (ब्रह्मा के अवतार) सभी हमारे सम्मान तथा उपासना के योग्य हैं।

हमने धार्मिक साहित्य में उनके विषय में बहुत कुछ पढ़ा है। पौराणिक कथाओं में वे हमारे नायक और नायिकाओं के रूप में अवतरित होते हैं लेकिन इस प्रकार वे मानव-कल्पना के अतिरिक्त कुछ नहीं होते।

जब संत-सत्गुरु किसी आत्मा को अपने साये में ले लेता है तो वह धीरे-धीरे उन सबके सही महत्व को प्रकट कर देता है। सृष्टि के आदि से ही ये सभी अस्तित्व में हैं और उन्हें मिली अपनी-अपनी ड्यूटी निभाते रहते हैं लेकिन जब तक हमें सत्गुरु साथ ले जा कर इनका रहस्य न दिखाए, हम उन्हें या उनके द्वारा किये कर्मों और उनके अधिकार क्षेत्र को नहीं जान सकते।

परमात्मा स्वयं ही इंसानी चोले में (संतों और अवतारों के रूप में) आकर हमें अपने बारे में बतलाता है। गुरु अमरदास जी ने इसी लिये

फरमाया है :

धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ।(556)

(प्रभु का यह मूलभूत सिद्धांत है कि सत्गुरु की कृपा के बिना कोई इंसान उसके बारे में सोच भी नहीं सकता।)

संत कबीर भी हमें बतलाते हैं :

गुरु बड़ो गोबिंद ते, मन महि देख विचार।
हरि सुमिरे सो वार है, गुरु सुमिरे सो पार।।

(सत्गुरु परमात्मा से भी बड़ा होता है। तुम इस सिद्धांत पर अच्छी तरह से सोच-विचार कर लो। परमात्मा की भक्ति आत्मा को संसार में फँसाये रखती है लेकिन सत्गुरु के प्रति की गई भक्ति उसे प्रभु से एकमेक कर देती है।)

सत्गुरु की महानता इस बात में है कि वह आत्मा को परम सत् के साथ जोड़ देता है और उसे जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति दिला देता है। परमात्मा हमारे साथ होते हुए भी न तो सीधा हमारे सामने प्रकट हो सकता है और न ही आत्मा को स्थूल मंडल से परे ले जा कर मुक्त कर सकता है।

केवल सत्गुरु (मानव तनधारी प्रभु) के निर्देशों को मान कर और 'शब्द' के साथ संबंध स्थापित करके ही व्यक्ति ये आश्यर्चजनक नतीजे प्राप्त कर सकता है।

बिना 'शब्द' के सांसारिक बंधन से कोई मुक्त नहीं हो सकता। सत्गुरु शब्द-सदेह होता है और वही इस शब्द को हमारे अंदर भी प्रकट कर सकता है।

हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर। *-कबीर*

शिवे रुष्टे गुरुस्त्रता, गुरै रुष्टे न काश्चन।

(यदि शिव भगवान नाराज़ हो जाये तो सत्गुरु जगह है परंतु यदि सत्गुरु ही नाराज़ हो जाए तो फिर कोई ठिकाना नहीं है।)

इस बारे में सहजोबाई, जो एक महिला संत हुई हैं, अपने सत्गुरु चरणदास की महिमा महान मधुर शब्दों गाती हुई कहती हैं :

राम तजूं पै गुरु न बिसारूँ। गुरु के सम हरि कूं न निहारूँ।।
हरि ने जनम दियो जग माहीं। गुरु ने आवागमन मिटाहीं।।
हरि ने पाँच चोर दिए साथा। गुरु ने लई छुड़ाय अनाथा।।
हरि ने कुटुंब जाल में गेरी। गुरु ने काटी ममता बेरी।।
हरि ने रोग सोग उरझायो। गुरु जोगी कर सबै छुड़ायो।।
हरि ने करम भरम भरमायो। गुरु ने आतम रूप लखवायो।।
हरि ने मो सूं आप छिपायो। गुरु दीपक दे ताहि लखवायो।।
फिर हरि बंध मुकति गति लाए। गुर ने सब ही भरम मिटाए।।
चरनदास पर तन मन वारूँ। गुरु न तजूँ हरि कूं तजि डारूं।।

(मैं परमात्मा को छोड़ सकती हूँ परंतु सत्गुरु को एक क्षण के लिये भी नहीं त्याग सकती क्योंकि मैं अपने गुरु को परमात्मा से भी बड़ा मानती हूँ।

परमात्मा ने मुझे संसार – रूपी जंगल में छोड़ दिया परंतु सत्गुरु ने मेरे सारे बंधन काट दिये हैं और मुझे लगातार चलते रहने वाले आवागमन के चक्र से बचा लिया है।

परमात्मा ने मेरे साथ पाँच भयंकर मारक पाप (काम – इच्छा, क्रोध, लोभ, अहंकार और मोह) बाँध दिये परंतु सत्गुरु ने मेरी असहाय अवस्था पर दया कर के मुझे उन सभी से छुड़ा लिया

है।

परमात्मा ने मुझे बीमारी, बुढ़ापा, कमज़ोरी और मृत्यु दी थी परंतु सत्गुरु ने अपनी यौगिक शक्तियों के प्रयोग से मुझे उन सभी से बचा लिया है।

परमात्मा ने मेरे हाथ – पैर बाँध कर कर्म – बंधन के जाल मे बाँध दिया था परंतु सत्गुरु ने मेरे सम्मुख मेरी वास्तविक अवस्था— आत्मरूपता को प्रत्यक्ष दिखला दिया और अब मुझे समझ आ रहा है कि मैं तो आत्मा हूँ, जो समस्त विश्व की आत्मा है।

परमात्मा मेरे अंदर ही था परंतु वह पर्दे के पीछे ही छिपा रहा। सत्गुरु ने सत् की ज्योति देकर मेरे अंदर छिपे परमात्मा को मुझे प्रत्यक्ष करके दिखा दिया।

और फिर परमात्मा ने बंधन और मुक्ति दोनों को ही पैदा किया परंतु सत्गुरु ने इन सभी कपोल – कल्पनाओं को समाप्त कर दिया है।

अतः मैं तो अपने सत्गुरु चरणदास जी के चरण – कमलों में अपने तन – मन को न्योछावर कर दूँगी। इतना ही नहीं, यदि मुझे परमात्मा और सत्गुरु इन दोनों में से किसी एक को चुनना पड़ा तो मैं सत्गुरु के लिए परमात्मा को त्याग दूँगी।)

अध्याय 18

गुरुदेव

(सत्गुरु का सूक्ष्म अथवा स्वयं नूरी – ज्योतिर्मय स्वरूप)

'देव' शब्द संस्कृत की मूल धातु 'दिव' से बना है जिसका अर्थ है 'प्रकाश'। जब आत्मा स्थूल शरीर तथा स्थूल मंडल को त्यागने के पश्चात् सूक्ष्म मंडल में ऊपर जाती है तो मार्गदर्शन के लिये सत्गुरु वहाँ सूक्ष्म एवं नूरी स्वरूप में प्रकट हो जाता है, इसी लिये उस स्वरूप के लिये 'गुरुदेव' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

थ्योसोफिकल साहित्य में सत्गुरु – संत व महापुरुषों के मुखमंडल के प्रकाश का ब्यान आता है जो सूक्ष्म व कारण मंडलों में मीलों तक फैला हुआ है।

इसी तरह गोस्वामी तुलसीदास हमें बतलाते हैं :

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।।

– मानस बालकाण्ड 0,3

(गुरु के चरण कमलों की नख रूपी मणियों से ज्योति निकल रही है जिससे तीसरी आँख या दिव्य चक्षु खुल जाती है।)

मौलाना रूम इस के बारे में फरमाते हैं :

पीरे कि चू दर दिलत नशीनद।
हाले अज़लो सबद बबीनद।

(सत्गुरु की ज्योति जिस आत्मा में प्रकट होती है वह दोनों जहानों के रहस्यों को जानने वाली हो जाती है।)

सच्चा गुरु परमात्मा का रूप होता है। वह वास्तव में सत्गुरु या सत्य का शिक्षक होता है और सत् की ज्योति को संसार में प्रकट करता है।

नानक गुरु गुरु है सतिगुरु मै सतिगुरु सरनि मिलावैगो।। (1310)

ऐ नानक! गुरु ही सत्गुरु है, मैं अपने सत्गुरु के चरण – कमलों का स्पर्श चाहूँगा।)

इसलिए 'गुरुदेव' शब्द से तात्पर्य सत्गुरु के नूरी स्वरूप से है जो स्थूल देह से अलग और बहुत ऊपर है और जिसे आत्मा अपनी अंतरीय सूक्ष्म ज्योति द्वारा सही तौर पर देख पाती है। जब आत्मा सत्गुरु के सूक्ष्म स्वरूप को अंतर में आमने – सामने देखती है तो उसके सभी भ्रम दूर हो जाते हैं और उसकी सारी मेहनत सफल हो जाती है।

नेत्र परगासु कीआ गुरदेव।। भरम गए पूरन भई सेव।। (200)

(गुरुदेव आँखों को दृष्टि प्रदान करता है। सभी भ्रम खत्म हो जाते हैं और सेवा का पूरा फल मिल जाता है।)

ईसा मसीह अपने उपदेशों में इस तरह से कहते हैं :

इसलिये अगर तुम्हारी एक आँख बन जाये तो तुम्हारा सारा शरीर ज्योति से भर जायेगा। – मत्ती 6:22 (बाइबल)

गुरु अर्जुन देव बतलाते हैं कि सत्गुरु का नूरी स्वरूप भक्त के मस्तक पर अपने आप प्रकट होता है:

सफल मूरति गुर मेरै माथै। जत कत पेखत तत तत साथै।। (535)

(सत्गुरु का ज्योति स्वरूप मेरे मस्तक में है। जब कभी मैं आँखें बंद करके देखता हूँ तो मैं उसे वहाँ ही पाता हूँ।)

एक मुस्लिम फकीर भी इसी तरह से फरमाते हैं :

दिल के आइने में है तसवीरे – यार,
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली।

सत्गुरु का यह ज्योतिर्मय सूक्ष्म स्वरूप ही आत्मा को परमात्मा की तरफ ले चलता है। वह स्थूल से लेकर ऊपर सत्लोक तक, सभी मंडलों में आत्मा के साथ होता है। गुरु, गुरुदेव, सत्गुरु और परमात्मा में कोई अंतर नहीं होता।

यह प्रभु की एक ही दिव्य धारा है जो विभिन्न मंडलों में विभिन्न नाम धारण करती है।

'जैसा मंडल, वैसा स्वरूप' के सिद्धांत का अनुसरण करते हुए दिव्यधारा जिज्ञासुओं के लाभ के लिये जब स्थूल मंडल में प्रकट होती है तो उसे 'गुरु' कहते हैं, जो अन्य अध्यापकों की तरह ज़बानी शब्दों द्वारा आध्यात्मिक जानकारी देता है।

जब जिज्ञासु की आत्मा शरीर छोड़ती है और सूक्ष्म मंडल में यात्रा के लिए तैयार होती है तो वही दिव्य धारा आत्मा के लाभ और मार्गदर्शन के लिये सूक्ष्म रूप धारण कर लेती है।

इस सूक्ष्म स्वरूप को, जो सत्गुरु के स्थूल शारीरिक स्वरूप से अलग होता है, 'गुरुदेव' कहा जाता है। यह स्वयं ज्योतिर्मय होता है और इसकी ज्योति मीलों तक फैली होती है । सत्गुरु सत्य या परमात्मा की शक्ति होता है जो गुरु और गुरुदेव दोनों के माध्यम से काम करता है। उसकी जड़ें सत् या सत्य में पक्की तरह स्थित होती हैं और वह सीधे अमर और अपरिवर्तनीय सत् से प्रेरणा ग्रहण करता है और इसी लिये उसे 'सत्गुरु' के नाम से जाना जाता है।

इस तरह हम देखते हैं कि सत्-धारा या सत् से बह कर फूट निकलने वाली 'शब्द' - धारा नीचे की तरफ बहती हुई मंडल पर मंडल बनाती हुई अंत में स्थूल मंडल बनाती है।

यह वह धारा है जो जीवों को वापस निज-घर ले जाने में तब तक सहायता करती रहती है और विभिन्न स्थानों पर विभिन्न नामों जैसे

गुरु, गुरुदेव और सत्गुरु से जानी जाती है, जब तक कि आत्मा सत् की जड़ तक न पहुँच जाए। वहां पहुँच कर आत्मा हैरान होकर चिल्ला उठती है- "वाह हे गुरु!" जिसका अर्थ है— "हे गुरु! आपकी कितनी निराली शान है!"

वह अवर्णनीय है और बुद्धि से परे है। गुरवाणी में हमें इस प्रकार का वर्णन मिलता है :

गुरुदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरा।। गुरदेव नानक हरि नमस्करा।।
(262)

(गुरुदेव ही सत्गुरु, पारब्रह्म और परमेश्वर है। ऐ नानक! गुरुदेव को नमस्कार करना ही हरि अथवा परमात्मा को प्रणाम करना है।)

गुरु जब स्थूल या भौतिक मंडल में काम करता है तो सत् से एकमेक होता है। इसी लिये कहा जाता है :

सफल मूरति गुरदेउ सुआमी सरब कला भरपूरे।। (802)

(सत्गुरु का पंच-भौतिक शरीर धन्य है क्योंकि यह प्रभु-सत्ता से लबालब भरा होता है।)

महिमा कही न आइ गुर समरथ देव।।
गुर पारब्रहम परमेसर अपरंपर अलख अभेव।। (522)

(सत्गुरु की महानता अवर्णनीय है और संपूर्ण बौद्धिक समझ से परे है क्योंकि वह पारब्रह्म, परमेश्वर है, बाहरी आँखों से नहीं देखा जा सकता)

गुरु देवा गुर अलख अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा।।
आपे दाति करी गुरि दाते पाइआ अलख अभेवा।। (1125)

(गुरुदेव को न तो जाना जा सकता है और न ही उसकी गहराई को

मापा जा सकता है। उसके आदेशों को मान कर व्यक्ति भूत, भविष्य और वर्तमान के रहस्यों को जान सकता है। केवल उसकी कृपा से ही व्यक्ति अलख और अभेव को जान सकता है।)

स्थूल विश्व में गुरु अध्यापक की तरह काम करता है, लेकिन जब जीव कुछ आध्यात्मिक अभ्यास करके पिंड या शरीर छोड़ने को तैयार होता है और अंड (सूक्ष्म मंडल) में प्रवेश करने वाला होता है तो गुरु उसकी सहायता के लिये अपने सूक्ष्म, दिव्य – रूप यानी गुरुदेव के रूप में सामने आ जाता है। यहाँ वह गुरु और सत्गुरु के बीच की कड़ी का काम करता है क्योंकि वह शरीरधारी गुरु से आत्मा की संभाल का काम अपने ऊपर ले लेता है और उसे सत्गुरु और सत् पुरुष के पास ले जाता है।

अब आत्मा स्थूल और सूक्ष्म मंडलों के बीच की सीमा को पार करती है और तारे, सूर्य और चंद्रमा में से गुज़रती है, जिसे वेदों में देवयान और पितृयान मार्ग कहा गया है, तो गुरुदेव आत्मा को मिलता है और उसका स्वागत करता है। सूक्ष्म स्वरूप सत्गुरु के स्थूल स्वरूप से बिल्कुल मिलता जुलता तो होता है लेकिन उससे अधिक सुंदर, दिव्य, भव्य, प्रकाशमय और आकर्षक होता है।

मौलाना रूम हमें बतलाते हैं :

रू बसूए असले तू हमचू जलील।
बगुज़री अज़ अख़्तरो चर्ख़ो बनील।
पाए हिम्मत बर खुरो बर माह नेह।
सर बर ईवाने आँ दरगााह नेह।

(अगर आप इस परमज्योति के भंडार को देखना चाहते हो तो इब्राहिम की तरह पहले अंतर्मुख निज – घर की तरफ मुँह करो, बड़े तारे और आसमान में से गुज़रो, धीरे – धीरे सूरज और चंद्रमा के ऊपर से

गुज़रो और तब तुम अपने आप को दिव्य संसार में पाओगे।)

गुरु नानक इस ज्योतिर्मय पथ का वर्णन इस प्रकार करते हैं :

आनंद रूपु अनूप सरूपा गुरि पूरै दिखलाइआ।। (1041)

(गुरु का नूरी – ज्योतिर्मय स्वरूप, अति आकर्षक, दिलकश और चित्त को तल्लीन कर देने वाला है। केवल पूरा गुरु ही इस स्वरूप को आत्मा के सामने प्रकट कर सकता है।

सत्गुरु का यह दिव्य स्वरूप विभिन्न अंतरीय मंडलों में हमेशा आत्मा के साथ चलता है और उसे सचखंड – सतलोक या निजघर पहुँचा कर ही दम लेता है। जब उसका नूरी स्वरूप शिव – नेत्र या दिव्य चक्षु पर प्रकट होता है तो शिष्य को कुछ और पाना शेष नहीं रह जाता। इसी में भक्त की भक्ति छिपी है। उसका आधा काम हो चुकता है और इसके बाद सत्गुरु का सूक्ष्म स्वरूप पूरी ज़िम्मेवारी के साथ आत्मा की संभाल का काम अपने ऊपर ले लेता है ताकि उसे अंतिम मंज़िल पर पहुँचा सके। संत भी इस स्वरूप की उपसाना करते हैं और इससे आनंद और मस्ती प्राप्त करते हैं:

चरण कमल गुरुदेव पिआरे।।
पूजहि संत हरि प्रीति पिआरे।। (394)

(परमात्मा के प्यारे संत गुरुदेव के चरण कमलों की उपासना करते हैं।)

ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भी सत्गुरु के नूरी स्वरूप की बातें करते हैं :

ज़ शरमे रूए माहत दर अर्क़ ग़र्क़ आफ़ताब,
व अज़ फ़रोग़े माहे रुख़सारे तू माह अन्दर नक़ाब।

आफ़ताब अज़ खाके, राहत याफ़्त चश्मे लाजुरम,

दर फ़जाए आसमां ज़द ख़ैमाए ज़री तनाब।

गर ज़ अनवारे रुख़त यक शोला ताबद बर फ़लक,
अज़ हया मस्तूर गरदद आफ़ताब अन्दर नक़ाब।

नूरे हक अस्त आं मुजस्सम गश्ता दर ज़ाते नबी,
हम चू नूरे माह कज़ खुर्शीद करदस्त इक्तसाब।

(ऐ मुर्शिदे कामिल! आपके नूरी चेहरे की ज्योति का मुकाबला सूरज भी नहीं कर सकता। आपकी चकाचौंध करने वाली ज्योति से बचने के लिये चंद्रमा ने अपना चेहरा बादलों में छिपा लिया है। सूरज ने अपनी रोशनी की चमक आपके चरणों की धूलि से उधार ली है और अपना सुनहरी खेमा नीले आसमान पर गाड़ दिया है। अगर आपके चेहरे की एक किरण भी आकाश में फट जाती तो सूरज भी शर्म के मारे पर्दे के पीछे छिप जाता। नबी (अवतार) के जिस्म में नूरे इलाही ने आकार धारण कर लिया है, ठीक वैसे ही जैसे कि सूरज की रोशनी चंद्रमा में आकार धारण करती है।)

मौलाना रूम अपने मुर्शिदे-कामिल के ज्योतिर्मय स्वरूप का हवाला इस तरह देते हैं :

चेह दानीतू कि दर बातन चेह शाहे हमनशीं दारम।
रुख़े ज़रीने मन बनगर कि पाये आहनीं दारम।

(शहंशाहों का शहंशाह, जो मेरे साथ रहता है, उसके बारे में आप क्या जानते हैं? मेरे अंतर में देखो, मेरी बाहरी सूरत से धोखा मत खा जाना।)

इसी तरह सेंट जॉन बाइबल में अंतरीय नूरी स्वरूप के साथ अपने अनुभवों का वर्णन करते हैं :

मैं आत्म रूप में था... और अपने पीछे से मैंने एक बहुत तेज़

आवाज, बिगुल बजने जैसी सुनी...

और मैं उस आवाज़ को देखने घूमा, जिसने मुझ से बात की और घूमते हुए मैंने देखा... इंसानी पुत्र के समान, पैरों तक वह एक चोगे में ढका हुआ था और उसकी छाती पर सुनहरा पटका था। उसके बाल और सिर ऊन जैसे सफेद थे, बर्फ जैसे सफेद थे और उसकी आँखें आग की लपटों के समान थीं।

उसके पैर भट्ठी में तपाई हुई बहुत बढ़िया पीतल की तरह थे.. और उसकी आवाज़ ऐसी थी जैसी कि पानी की धाराओं की आवाज़ हो और उसका मुख ऐसा प्रज्वलित था जैसे कि सूरज अपनी पूरी ताकत से चमकता है। – *रेवेलेशनज़ 1:10, 12 – 16*

इसके बाद मैं देखता रहा और आकाश में एक दरवाजा खुला और पहली आवाज़ जो मैंने सुनी, वह ऐसी थी, जैसे कि कोई नगारा बजता हुआ मुझ से बात कर रहा हो, जिसने कहा – इधर आओ और मैं तुम्हें वे चीज़ें दिखाऊँगा जो इसके बाद अवश्य होंगी। – *रैवेलेशनज़ 4:1*

स्वामी जी महाराज के सार-बचन में इसी तरह का संदर्भ हमें मिलता है :

गुरु मूरत अजब दिखाई। शोभा कुछ कही न जाई।। (19:7:12)

आध्यात्मिक विद्या के प्रसिद्ध शायर हाफिज़ साहब फरमाते हैं :

रुपश बचश्मे पाक तवाँ दीद चूं हलाल,
हर दीदा जाइ जल्वाए आँ माह पारा नेस्त।

(जिसकी नज़र है, वही उसकी शान को देख सकता है, वह हर किसी के सामने प्रकट नहीं होती।)

सत्गुरु का सूक्ष्म स्वरूप अपरिवर्तनीय है, अटल है। यही स्वरूप

जिज्ञासुओं का मार्गदर्शन करता है:

गुरुदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा।(250)

(सृष्टि के आदि में गुरुदेव था । प्रत्येक युग के आरंभ में गुरुदेव होता है और प्रत्येक युग में वह मौजूद रहता है। गुरुदेव के द्वारा की हरि तक पहुँचा जा सकता है।)

आदि गुरए नमह।। जुगादि गुरए नमह।।(262)
सतिगुर नमह।। सिरी गुरदेवए नमह।। (250)

(आदि गुरु को नमस्कार हो। युग के गुरु को नमस्कार हो। सत्गुरु अर्थात् सत्पुरुष के प्रकट रूप को नमस्कार हो और गुरुदेव अर्थात् गुरु के नूरी स्वरूप, जो गुरु और सत्गुरु के बीच की कड़ी होता है और विभिन्न मंडलों में आत्मा का मार्गदर्शन करके आगे ले जाने के लिये ज़िम्मेवार है, को नमस्कार हो।)

सत्पुरुष का सब से बड़ा और सब से ऊँचा स्वरूप गुरुदेव है। वह परमात्मा की नियंत्रक शक्ति है और मुक्ति प्रदान कर सकता है। उसकी भक्ति करके व्यक्ति तमाम सुखों को पा जाता है। सत् ही गुरुदेव है कुछ और नहीं। उसके अतिरिक्त सब उपासनाएं झूठी हैं।

गुरु अर्जुनदेव अपने गुरुदेव की महिमा निम्न स्मरणीय पदों में गाते हैं :

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसरा।।
गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा।।
गुरदेव दाता हरिनामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा।।
गुरदेव सांति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परसपरा।
गुरदेव तीरथ अंमृत सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरंपरा।।
गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा।।

गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा।।
गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा।।
गुरदेव सतिगुरु पारब्रहमु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमस्करा।।
(250)

(गुरुदेव ही पिता होता है, गुरुदेव ही माता होता है और वह स्वयं स्वामी और परमात्मा होता है। गुरुदेव सच्चा मित्र होता है जो अज्ञान के अंधकार को नष्ट करता है और तमाम बंधनों को तोड़ देता है। गुरुदेव नाम का दाता है जिसका जाप तमाम बुराइयों को भगा देता है। गुरुदेव शान्ति, सत्य और बुद्धिमत्ता का अवतार होता है और वास्तविक पारस होता है। गुरुदेव तीर्थस्थान, अमृत का स्रोत और ज्ञान की ज्योति होता है। गुरुदेव कर्ता है, पापों को नष्ट करता है और पापियों को पवित्र करता है। गुरुदेव सृष्टि का आदि है, प्रत्येक युग का आदि है और उसके द्वारा ही कोई हरि तक पहुँच सकता है। गुरुदेव परमात्मा का सबसे बड़ा वरदान है, जो यदि मिल जाये तो पापी से पापी को भी बचा लेता है। गुरुदेव सत्गुरु, पारब्रह्म और परमेश्वर होता है। ऐ नानक! उसको नमस्कार हो।)

गुरवाणी में सत्गुरु के मिलने से होने वाले अनेकों लाभों का वर्णन है:

पाँच घातक दोष—काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार समाप्त हो जाते हैं। अनगिनत युगों के कर्मों के ढेर नष्ट हो जाते हैं। वह जीव को शारीरिक चेतनता से ऊपर लाकर उसे ब्रह्मांडीय चेतनता में जगाता है जहाँ से वह माया की अग्नि में फिर नहीं जलता जिस में कि सारी मानवता फँसी पड़ी है।

आत्मा की सभी सांसारिक इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। इसके बाद उसका रास्ता बड़ा आसान और आरामदेह हो जाता है और सभी तरफ से

उसे बड़ाई मिलती है।

गुरुदेव अन्याय और अंधकार से भरे इस कलियुग के भवसागर में फँसे इंसानों को रोशनी दिलाता है और पापियों को भी सुरक्षापूर्वक शांति और आनन्द के साम्राज्य में ले जाता है। ऐसी तर चुकी आत्मा के साथ उसके सभी नजदीकी लोगों का भी उद्धार हो जाता है।

गुरुदेव का प्रकट होना मालिक की दया और रूहानी रास्ते पर इंसान की कोशिशों पर ही निर्भर करता है।

अध्याय 19

पूरा गुरु

पराविद्या (आध्यात्मिक विज्ञान) से लाभ उठाने के लिये नितांत आवश्यक है कि किसी जीवित सत्गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त हो जो अध्यात्म विद्या की कला और विज्ञान—दोनों में निपुण हो। ऐसा मुर्शिदे-कामिल या पूर्ण संत होना चाहिये जो जिज्ञासुओं को पूर्णता की ओर अग्रसर कर सके। यदि अंधे को अंधा रास्ता दिखायेगा तो दोनों की गड्ढे में गिरेंगे-यह आम कहावत है जिसे किसी टीका-टिप्पणी की जरूरत नहीं।

आध्यात्मिक पथ के कई ग्रेड या दर्जे होते हैं। सर्वोच्च मंजिल तक पहुँचा संत यानी पूर्ण संत ही जीवों को सर्वोच्च आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुँचा सकता है। जो व्यक्ति नौसिखिया है या आधी मंज़िल तक ही पहुँचा है वह जीव को चोटी तक नहीं ले जा सकता।

शिक्षा संस्थान में हम देखते हैं कि विभिन्न कक्षाओं के लिये विभिन्न स्तर के अध्यापक होते हैं। इस रूहानी विज्ञान में भी अनेक प्रकार के ग्रेड और डिग्रियां होती हैं जैसे साधु, संत और परम संत।

अध्यात्म के सिद्धांत और अभ्यास (Theory and Practice) दोनों की सही जानकारी के लिये हमें कम से कम संत की आवश्यकता पड़ती है । एक साधु (जिसने सफलतापूर्वक स्थूल, सूक्ष्म और कारण मंडलों को पार किया है और जो तन-मन के दायरे से ऊपर उठ चुका है), हमें रास्ता दिखा सकता है और हमें किसी संत से अगली ट्रेनिंग लेने योग्य कर सकता है लेकिन जो अभी साधु भी नहीं बना है, वह कोई मदद नहीं कर सकता। जन्म-मरण के चक्र से पूरी तरह आज़ाद होने के लिये हमें पूर्ण संत की आवश्यकता पड़ती है। पूरे गुरु के शरीर

पर कोई विशेष निशान नहीं होता। व्यक्तिगत संपर्क से ही धीरे-धीरे उसकी महानता के बारे में व्यक्ति कुछ जानने लगता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई विद्यार्थी ज्यों-ज्यों अपनी पढ़ाई में आगे बढ़ता जाता है, वह अपने अध्यापक की योग्यता के बारे में भी थोड़ा-थोड़ा जानने लग जाता है।

फिर, गुरु अपनी सारी महानता को एकदम प्रकट नहीं करता बल्कि जैसे-जैसे जिज्ञासु अपनी जिज्ञासा प्रकट करता है और रास्ते पर उन्नति करता है तो गुरु भी उसी अनुपात से अपनी योग्यता उसके सामने प्रकट करता जाता है। सत्गुरु साधारण अध्यापक की तरह ही शुरूआत करता है और मित्र और शुभचिंतक की तरह से शिक्षा देता है। समय के साथ, वह मुर्शिद या पूर्ण गुरु की सत्ता हमारे सामने प्रकट करता जाता है और अंत में वह सत्गुरु या सत्य का गुरु प्रतीत होने लगता है। फिर ऐसी अवस्था आ जाती है कि वह और परमात्मा एकमेक अतीत होने लगते हैं, उनके बीच में कोई सीमा रेखा नहीं रह जाती।

अध्याय 20

पूरे गुरु को कैसे पायें और पहचानें?

पूरे गुरु को पाना इतना सरल नहीं जितना कि लगता है। हर समय इंद्रियों के घाट पर बैठे होने के कारण हम वह आँख नहीं रखते जिससे उस मानव पोल को पहचान सकें जिस के द्वारा परमात्मा की सत्ता संसार में काम करती है। फिर भी जहाँ चाह वहाँ राह होती है। ज़रूरत इस बात की है कि जिज्ञासु में उद्देश्य प्राप्ति की सच्ची लगन हो और परमात्मा को पाने की तीव्र आकांक्षा हो। जहाँ आग जलती है, ऑक्सीजन सहायता के लिये आ जाती है और जीवन के सभी क्षेत्रों में, स्थूल मंडल से लेकर आध्यात्मिक मंडलों तक मांग और पूर्ति का नियम समान रूप से काम करता है। भूखे के लिये रोटी और प्यासे के लिये पानी हमेशा मिलता है।

मांगो और तुम्हें मिलेगा, खोजो और तुम उसे पा लोगे, दरवाजा खटखटाओ और तुम्हारे लिये यह खोल दिया जायेगा।

- मत्ती 7:7 (बाइबल)

कोई भी आदमी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता। या तो वह किसी एक से नफ़रत करेगा और दूसरे से प्यार करेगा, या फिर वह एक को पकड़े रखेगा और दूसरे को छोड़ेगा। तुम परमात्मा और शैतान की सेवा एक साथ नहीं कर सकते। *- मत्ती 6:24 (बाइबल)*

बाइबल में आगे हमें मिलता है :

मैं तुम्हारा परमात्मा, एक ईर्ष्यालु परमात्मा हूँ...

और इसी तरह से सत्गुरु, अपने प्रेमियों से अपने लिए पूर्ण और निर्मल प्यार चाहता है और जब तक कि कोई व्यक्ति अपना सब

कुछ—तन, मन और धन न्योछावर करने को तैयार न हो, उसका रास्ता नहीं खुलता है और न ही हम सत्गुरु के निकट ही आ सकते हैं जो आगे रास्ते को प्रकट करता है।

जब चेला तैयार हो जाता है, तब गुरु प्रकट होता है, यह परमात्मा का नियम है। आँखों पर पट्टी बँधा व्यक्ति अपने आप ही सरकस के मालिक के कमरे में कैसे प्रवेश पा सकता है?

कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले। *- जान 6:44 (बाइबल)*

जिन्हें परमात्मा चाहता है, वे स्वयं ही सत्गुरु के पास खिंचे चले जाते हैं या सत्गुरु स्वयं ही, चाहे वह कहीं भी क्यों न हों, उन्हें ढूँढ निकालता है।

इसी तरह से सत्गुरु को पूरी तरह से जानना मनुष्य के सामर्थ्य से परे है। हम उसकी महानता की उतनी ही झलक पा सकते हैं जितनी कि वह स्वयं हमें दिखलाना चाहे। सत्गुरु खुद ही फैसला करता है कि किस समय और कितनी प्रगति किस आदमी को मिले और जितना भी वह चाहता है, अपनी आध्यात्मिक निधि को हमारे सामने धीरे-धीरे प्रकट करता जाता है। हमें वह अपनी दात उतनी ही देता है जितनी हम समझ सकें और संभाल सकें। उसकी संगति में शिष्य जब आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ता जाता है तो उसे और अधिक समझता जाता है, जब वह उसकी ताकत को सभी अंतरीय मंडलों में एक सिरे से दूसरे सिरे मुक़ामे-हक़ या सचखंड तक काम करते देखता है, जहाँ कि वह (गुरु) अपने मूलरूप (एक ओंकार) में प्रकट होता है। स्थूल भौतिक-मंडल में, भूमंडल के नियमानुसार वह 'शब्द'-सदेह होकर हमारे बीच रहता है और किसी भी अन्य अध्यापक की तरह हमें शिक्षा

देता है, इस संसार की ही नहीं बल्कि उस संसार की भी जो इससे बिल्कुल भिन्न है, स्वयं ज्योतिर्मय है और अनगिनत तारे, चंद्रमा और सूर्यों से भरा हुआ है। देखने में तो वह हमारे सांसारिक दुखों-सुखों में हिस्सा बाँटता है लेकिन वास्तव में वह इन झगड़ों, दुख-दर्दों से बहुत ऊपर रहता है और हमें सदा आध्यात्मिक हिदायत देता रहता है। चाहे हम इस दुनिया में हों या रूहानी मंडलों में, हर कदम पर वह अपने बुद्धिमत्तापूर्ण शब्दों से हमें ढारस देकर कई तरह से हमारे अंदर परमात्मा का प्यार भरता रहता है और हमें प्रेरित करता है कि हम परमात्मा की शान को बढ़ायें।

सत्गुरु सदा कृपालु होता है, उसकी कृपा सब पर बराबर बरसती है। फिर भी जैसा वह चाहे, प्रत्येक को उतनी की कृपा मिलती है।

वाहु वाहु सतिगुरु सतिपुरखु है जिस नो समतु सभ कोइ।
वाहु वाहु सतिगुरु निरवैरु है जिसु निंदा उसतति तुलि होइ।।
(1421)

(सत्गुरु सत् का स्वरूप होता है और वह सब कुछ जानता है, वही सब में विद्यमान है, फिर भी वह सब की प्रशंसा और निंदा से ऊपर रहता है।)